एम. ए. हिन्दी–

लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य

(चतुर्थ सेमेस्टर – चतुर्थ प्रश्न–पत्र)

[छत्तीसगढ़ स्थित अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर के अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों में संचालित एम. ए. हिन्दी तृतीय सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र (लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य) के नवीनतम सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित एवं अन्य विश्वविद्यालयों के लिए भी एम. ए. हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक]

संपादक

डॉ. रमेश टण्डन

(एम. ए.– हिन्दी, अंग्रेजी; पी–एच. डी., सीजी सेट)

विभागाध्यक्ष – हिन्दी

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

खरसिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

उप–संपादक

प्रो. संध्या पाण्डेय, एम. ए. (हिन्दी)

प्रो. बाल किशोर भगत, एम. ए. (हिन्दी, समाज शास्त्र), बी. एड., स्टेनो

प्रो. वंदना रानी खाखा, एम. ए. (हिन्दी), नेट, सेट,

प्रो. गोवर्धन सूर्यवंशी, एम. ए. (हिन्दी, राजनीति शास्त्र), बी. एड., नेट, सेट

प्रो. माग्रेट कुजूर, एम. ए. (हिन्दी), नेट, सेट

सर्वप्रिय प्रकाशन

कश्मीरी गेट, दिल्ली

लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य

डॉ. रमेश टण्डन

ISBN- 978-93-89989-86-1

●

प्रकाशक

सर्वप्रिय प्रकाशन

प्रथम मंजिल, चर्च रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मो. 9425358748

e-mail : sahityavaibhav@gmail.com

www.vaibhavprakashan.com

●

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : सितम्बर २०२०

मूल्य : ३०० रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

LOK SAHITYA EVAM CHHATTISGARHI SAHITYA

BY : DR. RAMESH TANDAN

Published by

Sarvapriya Prakashan

First Floor, Church Road, Kashmiri Gate, Delhi

First Edition : September 2020

Price : Rs. 300.00

(प्रस्तुत पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में लिखित पाठ्य सामग्री उसके लेखक/संकलनकर्त्ता के द्वारा एम ए हिन्दी में अध्ययनरत छात्रों के हित के लिए विभिन्न किताबों अथवा नेट से संकलित की गई है। अपने पाठ की पूर्णता के लिए इस पुस्तक के अध्याय लेखकों के द्वारा मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट से उद्धरण अथवा उदाहरण लिए गए हैं, अतः उन मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट के क्रमशः लेखकों अथवा संपादकों/शोध छात्रों अथवा अपलोडर्स का सर्वश्रेष्ठ आभार जिनकी पाठ्य सामग्री को यहाँ उद्धृत किया जा सका है। मौलिक तथ्यों /परिभाषा आदि में फेरबदल के लिए इस पुस्तक के संपादक अथवा प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे अपितु अध्याय लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे तथा किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र खरसिया (छ.ग.) होगा।)

1.

लोक साहित्य – लक्षण, परिभाषा, क्षेत्र

– डॉ. श्रीमती धनेश्वरी दुबे *

सेमेस्टर – IV प्रश्नपत्र – IV (लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य) इकाई 01

मनुष्य सृष्टि के आरंभ में प्राकृतिक जीवन व्यतीत करता था। उसके आचार और विचार में किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं थी। उसके सारे कार्य हंसना, बोलना, उठना, बैठना आदि में कोई विषयगत अथवा भाषागत सजावट नहीं थी, बल्कि उसका सहज उद्‌गार प्रकट होता था। यही लोक साहित्य का मूल मानस है। समस्त विश्व के लोक साहित्य की यही व्याख्या है, चाहे जिस भाषा का साहित्य हो, जिस समाज की झंकार हो, मूल एक है। शरीर और परिधान भले ही भिन्न हो, एक सूत्र है, एक श्रृंखला है। साधारण मानव की भोली–भाली सूक्ष्म कल्पना एक होती है, स्थान वैविध्य के कारण कुछ विशेषताएं भले ही आ जाएं।

लोक साहित्य लोक जीवन की अभिव्यक्ति है। वह जीवन से घनिष्ठता से संबंधित है। लोक साहित्य एक परिभाषिक शब्द है जो लोक तथा साहित्य से मिलकर बना है। अतएव लोक साहित्य को समझने के पहले इन दोनों शब्दों को समझना उपयोगी होगा।

'लोक' शब्द का अर्थ –

'लोक' शब्द का प्रयोग अत्यंत प्राचीन काल से होता आया है। अनेक पुरातन ग्रंथों, वेदों, उपनिषदों, भाष्यों, भरतमुनि के नाट्यशास्त्र, ऋषि व्यास की शतसाहस्त्री संहिता में अनेक स्थलों पर 'लोक' शब्द के प्रयोग को

*जन्म : 15 मार्च 1966, सतीगुढ़ी चौक रायगढ़, माता : श्रीमती चन्द्रिका चौबे, पिता : श्री भरत लाल चौबे, पति : श्री प्रदीप कुमार चौबे, संतान : एक पुत्री– गार्गी दुबे, शिक्षा : एम. ए. (दो स्वर्ण पदक), एम. फिल., पी–एच. डी., सम्प्रति : विभागाध्यक्ष (हिन्दी), शासकीय इं. वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.), Mo. 9406298740 Email- dubeydhanehwari@gmail.com